आरएनआई. 62763/94

₹ 100

अवध ज्योति

वर्ष - 30

अवधी त्रैमासिकी

जनवरी-मार्च-2025

तुलसी बाबा, भाषा मैंने तुमसे सीखी,
मेरी सहज चेतना में तुम रमे हुए हो।
कह सकते थे तुम सब कह्यौ मीठी-तीखी,
प्रखर काल की धारा पर तुम जमे हुए हो।
और वृक्ष गिर गये मगर तुम थमे हुए हो,
कभी राम से अपना कुछ भी नहीं दुराया।
देखा तुम उनके चरणों पर नमें हुए हो,
विश्व बदर था हाथ तुम्हारे उक्त फुराया।
तेज तुम्हारा था कि अमंगल वृक्ष झुराया,
विघ्न विपद के घन सरके मुंह कहीं चुराया।
आठो पहर राम के रहे राम गुण गाथा
यज्ञ रहा तप रहा तुम्हारा जीवन भू पर,
भक्त हुए उठ गए राम से भी यों ऊपर।

– त्रिलोचन शास्त्री

तुलसी जन्म भूमि अंक

पंजी. सं. - 457/2010-11
निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
स्थापित वर्ष : 1990
अवध भारती संस्थान

अवध-ज्योति

वर्ष : 30
जनवरी-मार्च - 2025

संरक्षक :
डॉ. सत्या सिंह
सम्पादकः
डॉ. रामबहादुर मिश्र
अतिथि सम्पादकः
प्रो. शैलेन्द्र नाथ मिश्र
उप सम्पादक :
रमाकांत तिवारी 'रामिल'
सह सम्पादक :
डॉ. शेषमणि शुक्ल
सम्पादन सहयोगः
ओम मिश्र

पीयर रिव्यू पैनलः
प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, लखनऊ
रामदेव धुरंधर, मारिशस
श्री विक्रममणि त्रिपाठी, नेपाल
सुधेन्दु ओझा, दिल्ली

अवध भारती संस्थान
नरौली, हैदरगढ़, बाराबंकी-225124
'अवधी भवन' अवध भारती संस्थान
अर्जुनगंज, लखनऊ-226002
वेब - www.awadhawadhi.com
e-mail: awadhjyoti@gmail.com
salmanansari7@gmail.com
Mob. : 9450063632

मुद्रक : सैप प्रकाशन
बी.एच.ई.एल. रोड नं. 1
यूपीएसआईडीसी, जगदीशपुर
अमेठी मो. 9565723540

विषय क्रम

रामजोहारि - रामबहादुर मिसिर 4
सम्पादकीय : प्रो. शैलेन्द्र नाथ मिश्र - 5
हाल-चाल 10-11

लेख :
1. तुलसी तिहारो घरु जायो-प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित 12-50
2. प्रो. दीक्षित के शोधपरक कार्य के परिप्रेक्ष्य में सम्मतियाँ 51-83
3. तुलसीदास की असली जन्मभूमि - डॉ. श्रीनारायण तिवारी 84-89
4. तुलसी की जन्मभूमि - डॉ.श्यामसुन्दर मिश्र 'मधुप' 90-94
5. तुलसीदास का गुरूधाम सूकरखेत - डॉ. भगवती प्रसाद सिंह 95-107
6. तुलसीदास विषयक मतों की आलोचना और समीक्षा - डॉ. शेषमणि शुक्ल 108-113
7. तुलसी जन्मभूमि - प्रो. सूर्यपाल सिंह 114-116
8. लखनऊ विश्वविद्यालय 1997 में आयोजित संगोष्ठी में गोण्डा के पक्षधर विद्वानों की सूची 117-119
9. तुलसीदास : परिवेश, प्रेरणा और प्रतिफलन - प्रो. हरिकृष्ण अवस्थी 120-127
10. तुलसी की जन्मभूमि : कुछ निर्णायक अंतः साक्ष्य -जगन्नाथ त्रिपाठी गोण्डा 128-141
11. गोस्वामी तुलसीदास की जन्मभूमि - डॉ. रमाशंकर तिवारी 142-159

कविताएँ :
1. शैलेन्द्र शुक्ल सागर 160
2. रामधीरज शर्मा ग्राम तिकुरी बहराइच 161
3. ऐसा युगदर्शी - डॉ. सत्यप्रसाद द्विवेदी पथिक 162
4. पुष्कर बाबू - 163
5. डॉ0 अवध नरेश उमरी कैसरगंज, बहराइच 165
6. मनोज मिश्र 'कप्तान' श्रावस्ती 166
7. विजय प्रकाश मिश्र, 167
8. रमाकांत सिंह 'शेष' वाराणसी 168
9. सतीश आर्य मनकापुर गोण्डा 169
10. राम संवारे द्विवेदी 'चातक' महसी बहराइच 170
11. हरिराम शुक्ल प्रजागर गोण्डा 171
12. घनश्याम अवस्थी - गोण्डा 172
13. सुरेन्द्र सिंह 'झंझट' ' गोण्डा 173
14. रामकरण मिश्र 'सैलानी' बहराइच 174
15. तुलसीदास चालीसा - दिवाकर पाण्डेय चित्रगुप्त 175
16. राजेश ओझा गोण्डा, उ0प्र0 177
17. तुलसी-हुलसी - शिवाकान्त मिश्र 178

खाताधारक : अवध भारती संस्थान
बैंक : पंजाब नेशनल बैंक, हैदरगढ़, बाराबंकी
खाता संख्या : 6844000100008997
आईएफसी कोड : PUNB0684400

एक प्रति मूल्य : 50/-, वार्षिक - 200/- यह अंक-100/-
आजीवन सदस्यता : 1. विशेष सम्मानित : 5000/-
2. संरक्षक सदस्यता : 11000/-

रामजोहारि

उत्तर प्रदेश विधान सभा कै ऐतिहासिक पहल

अवधी, भोजपुरी, ब्रजी, बुंदेली भाषा मा विधान सभा कै कार्यवाही

उत्तर प्रदेश कै अठारहवीं विधान सभा बजट सत्र (2025-26) से यक अनूठी औ ऐतिहासिक पहल किहिस हवै। अब विधान सभा कै कार्यवाही भोजपुरी, ब्रजी औ बुंदेली के साथेन अंग्रेजी भाषा मा सुनी जाय सके। ई देश की कौनिउ विधान सभा मा अपनी तरह कै पहिल सुरूआत आय। इहकै उद्देश्य आम नागरिक औ गंवई परिवेश के मनइन का लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जोड़ब हवै।

सचिवालय चारौ क्षेत्रीय औ अंग्रेजी भाषा खातिर पांच चैनल बनाइस हवैं, जिहमा अनुवादक रियल टाइम से क्षेत्रीय भाषन कै भाषा प्रसारित करिहैं। विधान सभा सदस्य ई पांचौ चैनलन मा अपने मनचाहे चैनल से आपन बात कहिहैं औ सुनिहैं। उ.प्र. विधान सभा के अध्यक्ष श्री सतीश महाना ई ऐतिहासिक पहल के बारे मा बताइन कि उत्तर परदेस बहुतै बड़ा औ विविधता से भरा राज्य हवै। जहाँ पै अलग अलग क्षेत्रन मा उनकै आपन-आपन खास बोली औ भाषा हवैं। यही बरे ई जरूरी हवै कि विधान सभा अपनी जनता से वहिकी बोली-बोनी मा बात कइकै अपना का जोड़ै।

दरअसल हिन्दी भाषा तमामन उपभाषा औ बोली बानिन कै समुच्चय औ संश्लिष्ट रूप होय। इहमा पाँच उपभाषा औ अठारह बोली समाहित हवैं। हिन्दी की इनहिन बोली के समूह से खड़ी बोली कै मानक बनाय के ई बोलिन के समूह कै मुखिया के रूप मा खड़ी बोली का बनावा गवा। मुला खड़ी बोली के मुखिया बने से हिन्दी न तौ अपनी बोलिन से अलग बनि जात है औ न ई बोलिन कै महत्व कम होइ जात हवै। सच्चाई तौ हवै कि ई सब बोली हिन्दी कै ताकत आयँ। उनका बोलै वालेन की तादाद औ साहित्य के दम पै हिन्दी बहुसंख्यक लोगन की समृद्ध भाषा के रूप मा जानी जात हवै।

जब हम विस्तार मा जाइत हवै तौ ई पता चलत हवै कि हिन्दी भाषा आठ प्रादेशिक भाषा अर्थात उपभाषा (बोली) से बनी हवै ई हवैं - उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, मध्यप्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, राजस्थान औ हरियाणा। हिन्दी की प्रादेशिक बोलिन मा राजस्थान मा राजस्थानी, उत्तराखंड मा गढ़वाली, कुमाँऊनी, नेपाली, पछारी, उत्तर प्रदेश मा अवधी, भोजपुरी, ब्रजी, बुंदेली, कन्नौजी, कौरवी, काशिका, पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ औ मध्य प्रदेश मा अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही, अंगिका, बज्जिका, बघेली, बोली जात हवै। यही मेर से हरियाणा मा तांगड़ बोली जात हवै। यही के साथ यक बात बताउब जरूरी हवै ई सब बोलिन मा उपबोली हवैं, जइसन